भावी अध्यापकों के पौध-निर्माण की नर्सरी
मीना मंच

आरती गुप्ता*

आजकल हमारे सामाजिक परिदृश्य पर वैश्वीकरण, उदारीकरण व निजीकरण के प्रभाव अपनी झलक दिखलाते हैं और शिक्षा भी इससे अछूती नहीं है। बच्चे बुद्धिमान व जागरूक हैं। उनकी आँखों में समाज के इस परिदृश्य को भविष्य के लिए सजाने व संवारने के शिक्षा से संबंधित जादुई सपने हैं। बड़े-बड़े व्यवसाय, उनके आदर्श व मंजिल हैं...शायद इसलिए ही शिक्षा को बुनियादी मौलिक अधिकार बनाया गया है, जिससे शिक्षा व्यवस्था को शुरू से सुधारा जाए। खासकर प्राथमिक शिक्षा के यही दोनों स्तर माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के लिए उपजाऊ भूमि तैयार करते हैं व इसे हरा-भरा बनाते हैं। इस पल-पल बदलती दुनिया में, इस उपजाऊ भूमि को हरा-भरा बनाए रखने के लिए नयी पौध रोपने का काम शीघ्रता से शुरू करना, जिससे ये नन्हें पौधे आगे के लिए तैयार रहें, यह नन्हें पौधे कौन हैं? क्या ये क्यारी/नर्सरी हैं? आदि प्रश्नों के उत्तर जानने के लिए पढ़िए यह लेख।

भूमिका

संसार के उन्नतशील व प्रगतिशील राष्ट्रों की तरह भारत में भी प्राथमिक शिक्षा को सार्वभौमिक व सर्वसुलभ बनाने के लिए शुरू से आज तक, विशेष कर स्वतंत्रता के उपरांत अनेक योजनाएँ, परियोजनाएँ व अभियान चलाए गए, जैसे— अनौपचारिक शिक्षा परियोजना, ऑपरेशन ब्लैक-बोर्ड, बेसिक शिक्षा परियोजना, ज़िला प्राथमिक कार्यक्रम (डी.पी.ई.आई.), स्कूल रेडीनेस प्रोग्राम, संपूर्ण साक्षरता अभियान, सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए), प्रारंभिक स्तरीय राष्ट्रीय बालिका शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.जी.ई.एल), राष्ट्रीय बाल ग्राम परियोजना, मध्याह्न भोजन (मिड-डे-मील) एवं अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के बच्चों को प्रोत्साहन, स्कूली वर्दी, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें आदि।

* *प्रवक्ता,* शिक्षाशास्त्र, बी.एड., निजी कॉलेज (कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र हिसार, हरियाणा)

इन सभी योजनाओं, परियोजनाओं में भारत सरकार ने विश्व के सबसे बड़े कार्यक्रमों में से एक सर्व शिक्षा अभियान, 2001 में शुरू किया, जो प्राथमिक स्तर की सभी समस्याओं—ड्रॉप आउट की समस्या, अध्यापकों की कमी, लोगों की शिक्षा के प्रति उदासीनता, शिक्षण सामग्री की कमी, लिंग-भेद, बालिका शिक्षा के प्रति उदासीनता आदि समस्याओं के दूर करने की अचूक औषधि के रूप में जाना जाता है। यह अभियान राज्यों एवं केंद्र सरकार की भागीदारी से समयबद्ध समेकित प्रयास द्वारा प्राथमिक शिक्षा के जन-जन तक पहुँचाने संबंधी चिर अभिलाषित लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में एक ऐतिहासिक प्रयास है व इससे संबंधित योजनाएँ इस अभियान की सहायक हैं।

सर्व शिक्षा अभियान का मूलमंत्र 'सब पढ़ें, सब बढ़ें', में शिक्षा को रुचिकर, सहज बनाने के लिए, सबको जगाकर शिक्षा के प्रति अपने उत्तरदायित्व को समझने के लिए, सबमें शिक्षा की ज्योति प्रज्ज्वलित करने के लिए, हमारी सरकार ने उल्लास व उमंग से युक्त भावी शिक्षक की पौध को मीना मंच नामक नर्सरी/क्यारी में रोपने का सफ़ल प्रयास शुरू कर दिया है। यह लेख हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर व निम्न प्राथमिक स्तर पर संचालित होने वाले मीना मंच से संबंधित है। मीना मंच क्या है? मीना कौन है? मीना की भूमिका बच्ची के रूप में कितनी महत्वपूर्ण है? आइए, जानने का प्रयास करते हैं।

मीना मंच

केंद्र सरकार, राज्य सरकार एवं यूनिसेफ़ के सहयोग से सर्व शिक्षा अभियान के मूल मंत्र 'सब पढ़ें, सब बढ़ें', के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अनेकों प्रोत्साहन व योजनाओं, जैसे—बच्चों को स्कूलवर्दी, स्टेशनरी, किताबें, बैग आदि देना, मध्याह्न भोजन की व्यवस्था, अनुसूचित जाति, जनजाति के बच्चों को कुछ प्रोत्साहन राशि के साथ-साथ सजीव व सकारात्मक, मनोरंजनात्मक व सांस्कृतिक गतिविधियों को संचालित करने का जो उत्तरदायित्व उच्च व निम्न प्राथमिक स्तर की बच्चियों/बच्चों के नन्हें हाथों में सौंपा गया, वह आधार मंच – मीना मंच है।

मीना मंच हरियाणा प्रदेश के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में केंद्र सरकार, राज्य सरकार व यूनिसेफ़ के सहयोग से बच्चों, खासकर बालिकाओं को, जो किसी भी कारण से विद्यालयी शिक्षा का पहला कदम भी पूरा नहीं चल पातीं, उन्हें स्कूल आने के रास्ते पर लाना, उनके अभिभावकों/ माता-पिता को बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक करना, बालक-बालिका के भेद को दूर करने के उपाय बताना, ड्रॉप-आउट से उत्पन्न विकारों व समस्याओं से परिचित करना आदि कार्यों को सूझ-बूझ से संचालित करने के लिए गठित किया गया मंच है।

प्राथमिक विद्यालयों (उच्च व निम्न दोनों में) में इन मीना मंचों का अभिप्राय, उद्देश्य, इनके गठन की प्रक्रिया, इनका महत्व व भूमिका एवं इन मीना मंचों द्वारा संपूर्ण वर्ष संचालित होने वाली गतिविधियों

की झलक निम्नलिखित पैराग्राफ़ों/विवरण से दिखाई देती है।

बालिकाओं के समूह में वास्तविक जीवन में जोश, उल्लास, उमंग से भरपूर, दयालु व सबकी प्यारी गुड़िया मीना (काल्पनिक नाम) है। इसका मीना नाम गाँव के वातावरण के अनुसार है, क्योंकि आज भी हमारे भारत के गांव में गीता, राधा, रुक्मणी, कविता, गायत्री, मंजू, मीना आदि नाम ही रखे जाते हैं। इन नामों से माता-पिता अपनी बच्चियों के भविष्य को पवित्र और स्मरणीय बनाना चाहते हैं।

मीना शब्द के कई अर्थ हैं, जैसे— पुराने समय से आज तक बच्चों-बच्चियों की पोशाकों, महिलाओं की पोशाकों, साड़ी, सूट, लहंगा आदि में बेल बूटों की कढ़ाई के काम में लाया जाने वाला, एक चमकीला धागा।

मीना एक प्रकार का लाल, हरा व चमकीला रंग/नग है, जो आभूषणों को आकर्षक बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। हमारी भारतीय फ़िल्म जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री मीना कुमारी हैं।

इन सभी उदाहरणों से यही अभिप्राय है कि मीना शब्द ऐसा है कि इससे संबंधित पात्र जिस किसी के पास आता-जाता है, मिलता है, उन सभी को उससे खुशी मिलती है। ऐसे पात्रों का मिलन मंच—मीना है। इस मंच के सभी सदस्य जोश, उमंग, उत्साह-उल्लास, हँसी-खुशी, दया, सहानुभूति, सूझ-बूझ से अपने गाँव के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा के प्रति जागरूक करने का काम अपनी सुगमकर्ता अध्यापिका/अध्यापक के साथ मिलकर बखूबी निभाते हैं।

मनोविज्ञान में व्यक्ति के जीवन का यह समय (बाल्यावस्था 06–14) जीवन का अनोखा काल माना गया। इस अवस्था में बच्चों को काम करने का जुनून बना रहता है। बस हमारे शिक्षा विभाग को एवं प्रत्येक शिक्षक को, विशेषकर उन शिक्षक वर्ग को, जो इस स्तर पर शिक्षण कार्य कर रहे हैं, देखना यह है कि इंसान के जीवन के इस जुनून व अनोखे काल को कैसे सकारात्मक ढंग से प्रयोग करें, जिससे यह नन्हें पौधे, इधर-उधर उजड़ने/रौदने के बजाय फलदार व छायादार वृक्ष बनें। शायद इसलिए ही केंद्र सरकार, राज्य सरकार व यूनिसेफ़ ने मिलकर यह कदम उठाया है।

मीना मंच विद्यालयी शिक्षा में प्राथमिक स्तर की 20 बच्चियों का एक समूह है। इसमें उच्च प्राथमिक स्तर की 15 छात्राएँ व प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी करने के बाद स्कूल छोड़ चुकी पाँच बालिकाएँ हैं।

मीना मंच की स्थापना मुख्य अध्यापिका/अध्यापक द्वारा होती है। इसके सुचारू व नियमित संचालन के लिए, मुख्य अध्यापिका/अध्यापक उच्च प्राथमिक स्तर की किसी एक शिक्षिका का चयन करते हैं और इन्हें ही मीना मंच का सुगमकर्ता कहा जाता है।

मीना मंच के उद्देश्य

1. सभी बाल-गोपालों का सही आयु में विद्यालयों में प्रवेश दिलवाना।
2. सभी बच्चों का विद्यालय में नियमित उपस्थित होना।

3. सार्वभौमिक निःशुल्क प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूर्ण करना।
4. शिक्षा से संबंधित मुद्दों पर सामुदायिक जागरूकता उत्पन्न करना एवं इससे संबंधित दूसरे कारक, जैसे— स्वास्थ्य, पोषण, पानी व स्वच्छता आदि पर सामुदायिक जागरूकता उत्पन्न करना।
5. बालिकाओं में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और अपने अधिकारों की समझ पैदा करना।
6. बालिकाओं को निर्णय लेने, समस्याएँ सुलझाने, दूसरों से सहयोग लेने, बातचीत करने का ढंग, अपनी बात प्रभावशाली ढंग से समझाने व भावनाओं तथा संबंधों के बीच संतुलन रखने जैसे आवश्यक जीवन कौशल सिखाने में सहायता करना।
7. बालिका के बहुमुखी व्यक्तित्व का विकास करना, जिससे उनमें लीडरशिप की क्षमता उत्पन्न हो।

शोधकर्ता जिन-जिन विद्यालयों में गई, वहाँ पर सभी महिला शिक्षिका ही मीना मंच का संचालन कर रही थीं।

मीना मंच के गठन में ध्यान रखने वाले बिंदु

1. मुख्य अध्यापिका / अध्यापक द्वारा इसकी स्थापना करना।
2. विद्यालय के किसी एक शिक्षक को मीना सुगमकर्ता बनाना।
3. एक विद्यालय में एक से अधिक मीना मंच बनाए जा सकने व प्रत्येक मंच में कक्षा छह, सात व आठ की बालिकाओं को शामिल करना।
4. प्रारंभ में बीस छात्राओं को मीना मंच का सदस्य बनाना।
5. सुगमकर्ता शिक्षक द्वारा विद्यालय के अन्य शिक्षकों की सलाह से कक्षा के स्फ़ूर्तिवान व अपने काम में दृढ़ निश्चयी सदस्यों का चुनाव करना।
6. इस मंच के चयनित सदस्यों द्वारा प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी करने के बाद विद्यालय छोड़ चुकी लड़कियों को मीना मंच का सदस्य बनने के लिए प्रेरित करना एवं इन बालिकाओं को धीरे-धीरे इस मंच का सदस्य बनाना।
7. यदि विद्यालय में बीस से कम (इन तीनों कक्षाओं की) बालिकाएँ हैं, तो उतनी ही बालिकाओं के साथ इस मंच का निर्माण करना।
8. छात्र भी मीना मंच के सदस्य हो सकते हैं किंतु मीना मंच के सदस्यों द्वारा अधिक से अधिक छात्राओं को मंच का सदस्य बनाने की कोशिश करना।
9. मीना मंच की गतिविधियाँ अधिकतर विद्यालयी समय या सप्ताह में आधी छुट्टी वाले दिन सुगमकर्ता व मीना प्रेरक के अनुसार संचालित करना।
10. मीना प्रेरक सुगमकर्ता, शिक्षकों एवं सदस्यों के बीच की कड़ी है।
11. मीना प्रेरक सुगमकर्ता, शिक्षिका की मदद से मंच को कार्यों की योजना बनाना। मंच की बैठकें आयोजित करवाना (सुगमकर्ता के भाग लिए बिना)।

12. मीना प्रेरक कक्षा छह, सात व आठ की सदस्यों द्वारा अपनी-अपनी कक्षा के किसी एक सदस्य को अपना प्रतिनिधि चुनना, यही प्रेरक होती है।
13. मीना मंच की सभी गतिविधियों पर नज़र रखना एवं सभी गतिविधियों को मंच के रजिस्टर में लिखना।
14. मीना मंच के सभी सदस्य सप्ताह में एक बार या 15 दिन में एक बार आपसी संपर्क अवश्य करते हैं व अपने कार्यों पर चर्चा करते हैं।

मीना मंच का गठन होने के बाद सदस्य, मीना मंच द्वारा निर्धारित गतिविधियों के आयोजन की योजना बनाते हैं एवं मीना मंच का कैलेंडर समय व दिन के अनुसार निर्धारित करते हैं।

मीना मंच की गतिविधियों का कैलेंडर

गतिविधियों का कैलेंडर बन जाने के बाद भी मीना मंच इसे बदल सकते हैं। मीना मंच के सदस्यों को मिलने, अपनी गतिविधियों की योजना बनाने और उन पर चर्चा करने के लिए स्कूल में एक जगह की आवश्यकता होती है। इस कमरे का नाम मीना कक्ष है।

मीना मंच की गतिविधियाँ

1. समूह में चर्चा करना

समूह में चर्चा करना मीना मंच की सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि है। लोगों को असरदार ढंग से समझाने के लिए, बातचीत करने का अवसर देने से उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपने काम को सक्रिय रहकर पूरा करते हैं।

मीना मंच की प्रत्येक गतिविधि किसी न किसी मनोरंजनात्मक व सांस्कृतिक कहानियों व नाटक के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है। इसमें गाँव के लोग ज़रूर भाग लेते हैं, क्योंकि कहानियाँ व नाटक आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम आज भी लोगों को सीखने, समझाने व एक-दूसरे को आमने-सामने अपनी बात रखने का सबसे सशक्त माध्यम हैं।

2. प्रवेश उत्सव आयोजित करना

प्रधान अध्यापक सभी शिक्षकों, मीना मंच के सदस्यों और अपने इलाके के गणमान्य के साथ प्रवेश उत्सव की योजना बनाते हैं।

- प्रवेश उत्सव स्कूल खुलने के आठ-दस दिनों बाद आयोजित किया जाता है।
- इसके लिए मीना मंच के सदस्य घर-घर जाकर लोगों को आमंत्रित करते हैं।
- प्रवेश उत्सव के दिन मीना मंच के सदस्य द्वारा आयोजित की जाने वाली गतिविधियाँ स्कूल लेकर आना।
- माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, परिवार के सभी सदस्यों द्वारा बच्चों को सजा-धजा कर स्कूल लेकर आना।
- ग्राम प्रधान, पंचायत सदस्य या अन्य चुने हुए प्रतिनिधियों को प्रवेश उत्सव में बुलाना।
- स्कूल में आए बच्चों के हाथ की छाप किसी कागज़ पर लेकर उनके नाम सहित दीवारों पर लगाना। इससे बच्चों को लगेगा कि वे विशेष हैं।

- हम सभी जानते हैं कि गुरु बिन ज्ञान कहाँ से आए। गुरु को ईश्वर से भी ऊँचा दर्जा दिया गया है। वही बच्चों की प्रतिभा को तराशते हैं। उन्हें समाज का जानकार जागरूक नागरिक बनाते हैं। इसलिए कार्यक्रम में मीना मंच के सदस्यों द्वारा शिक्षकों के प्रति आदर और श्रद्धा प्रकट करना।
- अंत में माता-पिता और अन्य लोगों से शपथ दिलवाना कि वे अपने बच्चों को रोज़ाना समय पर स्कूल भेजेंगे और कम से कम आठवीं तक ज़रूर पढ़ाएँगे।
- पहले दिन स्कूल के बाद सभी बच्चों के साथ गाँव/बस्ती का चक्कर लगाकर पाठशाला प्रवेश उत्सव का समापन करवाना।

3. मीना वाचनालय बनाना व चलाना

वाचनालय की ज़िम्मेदारी दो सदस्यों को दी जाती है। बच्चों के माता-पिता को भी वाचनालय में बुलाते हैं, जिनका चयन मीना मंच के सदस्य करते हैं। वाचनालय को सप्ताह में एक बार खोला जाता है। आने वाले तथा पुस्तक पढ़ने वाले बच्चों के समय और दिन का फ़ैसला सुगमकर्ता करते हैं और उनका नाम रजिस्टर में लिखते हैं। यह कार्य इन सभी के नाम सदस्य शिक्षक की सलाह से किया जाता है।

4. उपस्थिति चार्ट बनाना

यह गतिविधि मीना मंच के सदस्यों के इस कदम की ओर संकेत करती है कि हमारे अध्यापकों की भागीदारी से, विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति से, बच्चों में उनके माता-पिता व विद्यालय के वातावरण में कैसा बदलाव आ रहा है। इसके लिए मीना मंच के सदस्य कुछ संकेतों का प्रयोग करते हैं। जैसे— महीने में 20 या उससे अधिक दिन विद्यालय आने वाले बच्चों को हरा स्टार एवं महीने में 15–19 दिन विद्यालय आने वाले बच्चों को पीला स्टार।

यह कार्य हमारे नन्हें अध्यापक महीने के अंतिम दिन कक्षा अध्यापक की सहायता से करते हैं एवं स्टार पाने वाले बच्चों के लिए ताली बजाकर उनका हौसला बढ़ाते हैं।

5. घरों में जाना

इसके लिए मीना मंच के सदस्य अपने गाँव या शहर के क्षेत्र को गलियों एवं मोहल्लों में बाँटते हैं और फ़िर इन गलियों व मोहल्ले के सदस्यों का समूह बनाते हैं। इन समूहों में दो-तीन सदस्य या इससे भी अधिक हो सकते हैं।

- प्रत्येक समूह को औसत 10–15 घरों की ज़िम्मेदारी दी जाती है।
- गृह भ्रमण के समय ये सदस्य माता-पिता को शिक्षा का महत्व बताना, अपनी बेटियों को विद्यालय भेजना, विद्यालयों में प्रत्येक नवीन योजना एवं गतिविधियों के बारे में बताना आदि कर्तव्य बखूबी निभाते हैं।

6. मोहल्ला सभाएँ आयोजित करना

मंच की यह गतिविधि बच्चों को प्रवेश कराने में बहुत कारगर है। मंच के सदस्य इस प्रकार की सभाएँ (मीटिंग) माता-पिता एवं विद्यालय आने के अनिच्छुक बच्चों के लिए करते हैं।

- यह मीटिंग प्रवेश समय से एक माह पहले व उपस्थित अनियमित होने की शंका होने

पर की जाती है, जैसे— फ़सल कटाई व त्योहारी समय आदि।

मीना मंच की (बैठक) मीटिंग किसी भी सदस्य के घर या माता-पिता व बच्चों की सुविधानुसार की जाती है।

7. विशेष मीटिंग आयोजित करना

यह बैठक मंच के सदस्य अपनी सुगमकर्ता शिक्षिका के साथ मिलकर आयोजित करते हैं। इनमें गाँव/बस्ती के सभी माता-पिता, दादा-दादी, नानी-नानी, धार्मिक व्यक्ति, स्थानीय नेता, गाँव/बस्ती के प्रतिष्ठित व पढ़े-लिखे लोग एवं शिक्षा विभाग में प्रचलित व नवीन योजनाओं के विशेषज्ञ/अधिकारी आते हैं, जो गाँव वालों के सवालों के उत्तर गाँव/बस्ती वालों के ढंग से बताते हैं।

8. दादी-नानी दिवस की योजना बनाना व आयोजित करना

शिक्षित व्यक्ति का यही तो गुण है कि वह बड़ों को सम्मान व छोटों को प्यार दें। मीना मंच के नन्हें अध्यापक यह भूमिका भी खूब ज़ोर-शोर से नाच-गाने के साथ करते हैं। इसके लिए दादियाँ-नानियाँ अपने जीवन के नैतिक अनुभवों व यादों को गीतों एवं कहानियों के माध्यम से बाँटती हैं।

वे सभी खुश होकर यह संकल्प लेते हैं कि अपनी नातियों-पोतियों को नाती-पोतों के समान ही विद्यालय भेजेंगी व पोती-पोतों के खाने-पीने, लिखने-पढ़ने में भेदभाव नहीं करेंगी।

9. मीना नाटक मंडली आयोजित करना

नाटक, बच्चों के सीखने का, बड़ों पर अपनी बात का प्रभाव डालने के लिए आज भी एक अनोखी विधा है। मीना मंच के सदस्य अभिभावक-शिक्षक मीटिंग (पी.टी.एम.) बाल सभा व दादी-नानी दिवस पर नाटकों का आयोजन करते हैं।

10. अन्य मीना मंच से मुलाकात

इस मंच के सदस्य छह महीने में एक बार दूसरे मीना मंच के सदस्यों से मिलते हैं व मीना प्रेरक तीन महीनों में मिलते हैं। यह गतिविधियाँ ब्लॉक स्तर पर होती हैं। इसमें सभी सदस्य अपने-अपने अनुभव एक-दूसरे से साझा करते हैं व सीखते हैं।

11. मीना मेलों का आयोजन

पर्व, त्योहार व मेले भारतीय जनमानस की आत्मा के प्रतीक हैं। बच्चे व बड़े आज भी मेले का नाम सुनते ही मस्ती से झूमने लगते हैं। अब अगर विद्यालय में मेला लगा हो तो क्या कहने...! बच्चे अपने माता-पिता को ज़रूर चलने की ज़िद करेंगे। इन मेलों का आयोजन मीना सुगमकर्ता, मुख्य अध्यापक, अन्य शिक्षक व मीना मंच के सदस्य मिलकर करते हैं।

इन गतिविधियों के अतिरिक्त मीना सुगमकर्ता व सदस्य दूसरी क्रियाएँ— विभिन्न प्रतियोगिता करवाना, जैसे— मेरे सपनों का विद्यालय, सुलेख प्रतियोगिता, गीत, कविता प्रतियोगिताएँ, बड़ों की संवाद प्रतियोगिता भी करवाते हैं।

मीना मंच में मीना सूचना केंद्र भी खोला जाता है जिसमें मुख्य रूप से निम्न के बारे में सूचना दी जाती है–

- प्रवेश की सही आयु;
- बालिका शिक्षा की विशेष योजनाएँ व प्रोत्साहन; तथा
- अन्य उपयोगी सूचनाएँ, आस-पड़ोस व घर-परिवार में साफ़-सफ़ाई रखने के ढंग, बीज-खाद खरीदते समय पढ़ाई की उपयोगिता व ध्यान देने वाली बातों को

पढ़ना, टीकाकरण, गंदे पानी से बचाव, खाना खाने के पहले व शौच के बाद साबुन से हाथ धोने के फ़ायदे।

इस केंद्र को विभिन्न विभागों के कार्यकर्ता स्थापित करते हैं व चलाते हैं।

अपने काम का लेखा-जोखा और मूल्यांकन

इसके लिए मीना मंच के सदस्य व मीना प्रेरक मिल कर रजिस्टर में मंच द्वारा की गई गतिविधियों को शुरू से लिखते रहते हैं कि उन्होंने कौन-सी गतिविधि किस महीने में की व उसमें कितने लोग शामिल हुए। इसके लिए शोधकर्ता ने उच्च प्राथमिक राजकीय कन्या विद्यालय, अग्रोहा हिसार से मीना मंच की गतिविधियों का कैलेंडर 2013 में तैयार किया।

मूल्यांकन के लिए मीना सुगमकर्ता मंच को सदस्यों के कुछ प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिए व चर्चा करने के लिए देते हैं। यदि इन प्रश्नों के उत्तर हाँ में प्राप्त होते हैं, तो इसका अर्थ है कि काम करने से परिवर्तन हो रहा है।